रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

युवाओं के लिए आदर्श और प्रेरणादायी है कविराज राजशेखर का जीवन दर्शन–कुलपति प्रो. मिश्र
रादुविवि में त्रिदिवसीय अखिल भारतीय राजशेखर समारोह का शुभारंभ

जबलपुर 29 मार्च। कविराज राजशेखर का जीवनदर्शन युवाओं के लिए आदर्श एवं प्रेरणादायी है। ऐसे महापुरूषों की प्रेरणा से ही आज की युवा पीढ़ी को भारतीय संस्कृति को जानने और समझने का अवसर प्राप्त होता है। संस्कृत भाषा विश्व की सभी भाषाओं की जननी है और संस्कृत की सेवा करने वाले भारत, भारतीयता और भारतीय संस्कृति के सच्चे वाहक हैं। उपरोक्त प्रेरक उद्‌गार माननीय कुलपति प्रो. कपिल देव मिश्र ने मंगलवार को रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय में आयोजित अखिल भारतीय राजशेखर समारोह के शुभारंभ अवसर पर कार्यक्रम अध्यक्ष के रूप में व्यक्त किये।

कालिदास संस्कृत अकादमी मप्र संस्कृति परिषद्, उज्जैन द्वारा संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर के सहयोग में त्रिदिवसीय अखिल भारतीय राजशेखर समारोह के उद्‌घाटन कार्यक्रम का आयोजन विवि के पं. कुंजीलाल दुबे प्रेक्षागृह में हुआ। उद्‌घाटन सत्र में मुख्य अतिथि माननीय श्री अशोक रोहाणी, विधायक केंट विधानसभा क्षेत्र, जबलपुर ने युवाओं से कल्चुरीकालीन कविजराज राजशेखर के जीवन दर्षन को जानने और समझने का आव्हान किया। आयोजन के सारस्वत अतिथि माननीय प्रो. श्रेयांष द्विवेदी, पूर्व कुलपति, महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल (हरियाणा) ने कहा कि राजशेखर ने अपने को कविराज कहा है और कवियों की दस श्रेणियों में महाकवि के ऊपर उसको स्थान दिया है। राजशेखर ने अपने को वाल्मीकि, भर्तृमेष्ट और भवभूति की परंपरा का व्यक्त किया है। वाचिक स्वागत प्रस्तुत करते आयोजन संयोजक एवं संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग रादुविवि के विभागाध्यक्ष प्रो. राधिका प्रसाद मिश्र ने कहा कि परवर्ती अनेक आलंकारिकों ने कविराज राजशेखर का अनुकरण किया है। रादुविवि में वर्ष 1973 से निरंतर राजशेखर समारोह का आयोजन किया जा रहा है।

लीक से हटकर बात रखने वाले आचार्य–

उद्घाटन सत्र में संस्कृत के विद्वान आचार्य कृष्णकांत चतुर्वेदी ने बताया कि कविराज राजशेखर काव्यशास्त्र के पण्डित थे। काव्यमीमांसा उनकी प्रसिद्ध रचना है। समूचे संस्कृत साहित्य में कुन्तक और राजशेखर ये दो ऐसे आचार्य हैं जो परंपरागत संस्कृत पंडितों के मानस में उतने महत्त्वपूर्ण नहीं हैं जितने रसवादी या अलंकारवादी अथवा ध्वनिवादी हैं। राजशेखर लीक से हट कर अपनी बात कहते हैं। उद्घाटन सत्र में अतिथियों द्वारा प्रो. राजेश्वर प्रसाद मिश्र एवं डॉ. सुमनलता श्रीवास्तव द्वारा लिखित पुस्तकों का विमोचन भी किया गया। आयोजन में विवि संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग के अतिथि विद्वान डॉ. साधना जनसारी, डॉ. अखिलेश मिश्र, डॉ. सरिता यादव, डॉ. जया शुक्ला, पं. रामफल शर्मा, विनोद तिवारी आदि की उपस्थिति रही।

संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वतजनों का सम्मान–

अखिल भारतीय राजशेखर समारोह में अतिथियों द्वारा संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वानों का विद्वत सम्मान चंदन, अक्षत, पुष्पमाला, साल, श्रीफल, स्मृति चिन्ह एवं अभिनंदन पत्र भेंटकर किया। इनमें आचार्य कृष्णकांत चतुर्वेदी, आचार्य राजेन्द्र प्रसाद त्रिवेदी, डॉ. पुष्पा झा, डॉ. इला घोष, आचार्य रहसविहारी द्विवेदी, आचार्य विष्णुमित्र त्रिपाठी, आचार्य कमलनयन शुक्ल एवं स्व. मोतीलाल पुरोहित की 23वीं पुण्यतिथि पर सम्मानित किया गया। स्व. मोतीलाल जी की ओर से उनके पुत्र श्री प्रेम पुरोहित एवं उनके अनुज द्वारा सम्मानपत्र प्राप्त किया गया। सभी सम्मानपत्रों का वाचन विवि संस्कृत विभाग के डॉ. अखिलेश मिश्र ने किया। उद्घाटन सत्र के मंच पर सभी सम्मानित आचार्य एवं कला संकायाध्यक्ष प्रो. धीरेन्द्र पाठक विराजमान रहे। अंत में आभार प्रदर्शन डॉ. संतोष पण्डया, निदेशक कालिदास संस्कृत अकादमी उज्जैन ने किया, संचालन डॉ. अखिलेश मिश्र ने किया।

मां नर्मदा के पूजन के साथ ग्वारीघाट से निकली कलशयात्रा–

अखिल भारतीय राजशेखर समारोह एवं शोध संगोष्ठी के उद्घाटन कार्यक्रम के पूर्व प्रातःकाल मां नर्मदा के पवित्र घाट ग्वारीघाट में माननीय कुलपति प्रो. कपिल देव मिश्र एवं आयोजन संयोजक प्रो. राधिका प्रसाद मिश्र, डॉ. संतोष पण्डया, निदेशक कालिदास संस्कृत अकादमी उज्जैन आदि की मौजूदगी में मां नर्मदा पूजन अर्चन कर कार्यक्रम समारोह को निर्विघ्न पूर्ण कराने एवं सफल कराने हेतु मां नर्मदा से प्रार्थन की गयी। विभाग के स्नातकोत्तर एवं कर्मकांड डिप्लोमा में अध्ययनरत छात्रों वैदिक ब्राह्मणों की मौजूदगी में विवि के राजशेखर भवन में स्थित राजशेखर जी की प्रतिमा का पूजन कर कलश यात्रा राजशेखर प्रतिमा से प्रारंभ कर मुख्य मार्ग से होते हुए प्रधान द्वार से प्रवेश कर वीरांगना रानी दुर्गावती की प्रतिमा तक पहुंची। तत्पश्चात पं. कुंजीलाल दुबे प्रेक्षागृह में प्रवेश कर समारोह का शुभारंभ हुआ। शोभायात्रा में वैदिक ब्राह्मणों द्वारा मंत्र पाठ कर मार्च निकाला गया।

शोध संगोष्ठी का आयोजन –

दोपहर में "राजशेखर साहित्य में पात्र योजना" विषय पर शोध संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें प्रो. ललित कुमार गोड़, डॉ. नीरज शर्मा, डॉ. लवकुश मिश्र, डॉ. इला घोष ने अपने शोधपत्रों का वाचन किया। शोध संगोष्ठी का संचालन डॉ. सरिता यादव एवं आभार श्री अजय मेहता ने किया।

शास्त्रीय नृत्य कथक की कलात्मक प्रस्तुति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम–

अखिल भारतीय राजशेखर समारोह में मंगलवार अपरांह विवि के पं. कुंजीलाल दुबे प्रेक्षागृह में सांस्कृतिक कार्यक्रम माननीय श्री हेमन्त जोशी, रजिस्ट्रार, उच्च न्यायालय, जबलपुर के आतिथ्य में हुए। इसमें ताल तपस्या (तबला त्रिवेणी) का प्रदर्शन श्री हर्षिल मेहता, श्री विनायक शर्मा, श्री केशव केवलिया, उज्जैन द्वारा किया गया। शास्त्रीय नृत्य कथक की कलात्मक प्रस्तुति डॉ. उपासना उपाध्याय एवं समूह, भातखण्डे संगीत महाविद्यालय द्वारा की गयी। आयोजन में माननीय कुलपति प्रो. कपिल देव मिश्र, कुलसचिव प्रो. बृजेश सिंह, अभा राजशेखर समारोह रादुविवि अध्यक्ष एवं संयोजक प्रो. राधिका मिश्र, कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जैन के निदेशक डॉ. संतोष पण्ड्या की मौजूदगी रही। संचालन डॉ. सरिता यादव ने किया।